मिलर महथा आदर्श महाविद्यालय, बहेड़ी,
दरभंगा (L.N.M.U)

मैथिली प्रतिष्ठा
स्नातक - तृतीय खण्ड
पंचम पत्र - मैथिली साहित्यक इतिहास
(आधुनिक काल)

नरेश कुमार
सहायक प्राचार्य
मैथिली विभाग
दिनांक 22/07/2020

व्याख्यानक संक्षिप्त अंश
(दोसर भाग)

प्रश्न 4. वर्णरत्नाकर काव्य नहीं काव्योपयोगी ग्रन्थ थिक" स्पष्ट करु।

उत्तर :- ..... एहि पोथीक विषयमे कहल जाइछ जे ई कविक कवि थीक। अर्थात् ज्योतिरीश्वर कवि लोकनिक मार्ग प्रदर्शनक हेतु एकर रचना करने छलाह। कोनो वस्तुक वर्णन कोना हो तकर ज्ञान कवि लोकनिकेँ एहिसँ भए जाइत छन्हि। संक्षेपमे कहल जा सकैत अछि जे कवि लोकनिक हेतु ई एकटा कोषक कार्य करएलक। अनेक परवर्ती कवि लोकनि एहि वर्णरत्नाकरसँ पूर्णतया प्रभावित भेलाह। मैथिली साहित्यक प्राण कवि कोकिल विद्यापतिए जखन हिनकासँ प्रभावित छलाह तखन आनक कोन कथा। ज्योतिरीश्वरक वर्ण-रत्नाकरसँ यत्र-तत्र भाव ग्रहण कए कीर्तिलता एवं कीर्तिपताका मे ओकर सान्निवेश करएलन्हि। यथा वर्ण रत्नाकरक वेश्या वर्णन एवं कीर्तिलताक वर्णनमें कतेक साम्य अछि तकर एक उदाहरण प्रस्तुत अछि-

'कृत्रिम लज्जा, कपट तारुण्य, धनार्थे प्रेम लोभार्थे विनय,
कराने सोभाग्य, निर्मुक्तं स्वामि सिन्दुर।'- 'वर्ण-रत्नाकर'
लज्जा क्रित्रिम, कपट तारुन्न। धन निमित्ते पर प्रेम,
लोभे विनय, सौभागे कामन, विनु स्वामी सिन्दुर।
'कीर्तिलता' (विद्यापति)

P.T.O

एहि प्रकारेँ एहि पोथीकेँ एक वृहद कोष कहल जा सकैछ। जाहिमे अभिधेयक लोकक हेतु बड़ महत्वपूर्ण सामग्री उपलब्ध अछि।

एहि पोथीक विषयमे डॉ० सुनीत कुमार -चटर्जीक ई विचार छन्हि-

मध्यकालक भारत ओ मिथिलामे विशेष रूपेँ जे सांस्कृतिक जीवन वर्त्तमान छल तकर स्पष्ट वर्णन एहि ग्रन्थमे अछि। एहिमे तुर्कक आगमनक कोनो प्रभाव नाहि भेटैछ। फारसी शब्दक प्रयोग प्राय: ग्रन्थक कापी तैयार करनिहारक कारणेँ भेल अछि .....।

वर्ण-रत्नाकरक शैली बाणभट्ट लिखित कादम्बरीक शैलीसँ मिलैत अछि। संस्कृतक साहित्यमे बाणक कादम्बरीक जे महत्व अछि ओहिसँ थोरको कम महत्व एकर मैथिली साहित्य मे नाहि अछि। जँ ज्योतिरीश्वर मैथिली भाषामे एकर रचना नहि करितथि तँ आइ मैथिली साहित्यक प्राय: ईअस्तित्व नाहि रहैत। जाहि भाषामे वर्ण-रत्नाकर सुदृढ़ प्रौढ़ गद्य ग्रन्थ विद्यमान अछि ओकर वैभवक अनुमान सहजहि लोक लगाए सकैछ। एहिमे काव्यक सब गुण विद्यमान अछि। संगहि ई कवि लोकनिक हेतु पथ-प्रदर्शक केर कार्य करैछ। अत: एहि ग्रंथक विषयमे कहु था कहल जाइछ जे वर्ण-रत्नाकरक काव्य नाहि काव्योपयोगी ग्रंथ थीक'। एहूसँ एकर महत्व बूझल जा सकैछ।

ज्योतिरीश्वरकेँ सब वस्तु सँ प्रेम छलन्हि आ जतए धरि भए सकलैन्ह ओ सब वस्तुक काव्यात्मक सृष्टि कए जन-मन केँ आनन्दित करलन्हि। नायिकाक हास्यक वर्णन करैत ओ लिखैत छथि- कुमुद कुन्द कदम्ब काल आल कैलास कर्पूरी पियूषक कान्ति प्रसारी सन,

22/07/2020